International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 01-02-2022, Accepted: 16-02-2022, Published: 04-03-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 5-10

मेरठ एवं बागपत जनपदों के ऐतिहासिक स्थलों में पर्यटन के विकास की सम्भावनाओं का अध्ययन

नवीनता रानी
एसोसिऐट प्रोफेसर, जी. डी. एम. इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन, मोदीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
पर्यटन उद्योग बिना अधिक पूंजी लगाये, पर्यावरण को संतुलित रखकर आज राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में विदेशी मुद्रा अर्जन का एक महत्वपूर्ण माध्यम ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मैत्रीय एवं सद्भावना को भी सुदृढ़ करने का माध्यम बन चुका है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ और बागपत जनपदों में प्रागैतिहासिक, रामायण एवं महाभारत कालीन युगों के राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व के अनेकों अवशेष फैले हुये हैं, जहाँ पर्यटन की अपरम्पार सम्भावनाएँ विद्यमान हैं, लेकिन वहाँ आधारिक संरचनाओं, परिवहन सुविधाओं, पर्याप्त सूचना केन्द्रों, प्रशिक्षित एवं कुशल मार्गदर्शकों का अभाव जैसी अनेकों समस्याओं का शीघ्रातिशिघ्र निराकरण करने के लिए सशक्त योजनाओं के निर्माण और उनका सुनियोजित ढंग से क्रियान्वयन करने की नितान्त आवश्यकता है, जिससे अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन के समस्त स्रोतों का समुचित विदोहन करके स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर रोजगार की समभावनाओं तथा आर्थिक विकास के साथ–साथ इस क्षेत्र की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक धरोहरों की मौलिक विरासत को संरक्षित रखते हुए निश्चित रूप से विकसित पर्यटन क्षेत्र के रूप में यह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व प्राप्त कर सकता है।

मूल शब्दः विदेशी मुद्रा अर्जन, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक

प्रस्तावना
जन्म से ही जिज्ञासु प्रकृति के मानव का जीवन अपनी जिज्ञासाओं को शान्त करने के लिए आदि काल से ही सुदूरवर्ती और दुर्गम स्थलों की यात्रा करते रहने के कारण घुमक्कड़ और पर्यटनशील रहा है। यह वृत्ति और इसकी पूर्ति का अनवरत प्रयास ही आज का विकसित एवं सुख–साधनों से सम्पन्न जीवन हैं। आधुनिक पर्यटन की प्रवृत्ति और उसके एक राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय उद्योग के रूप में विकास पाने के मूल में भी व्यक्ति की जिज्ञासा और नयी–नयी अन्वेषण करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति ही कही जा सकती है। विविध प्राकृतिक सौन्दर्य, भौगोलिक एवं मौसमी विभिन्नताओं तथा अनेक संस्कृतियों, उत्सवों, त्यौहारों, भाषा–बोलियों, खान–पान और परिधानों के संगम के कारण भारत–भूमि पर्यटन की दृष्टि से निश्चय ही वर्तमान में विश्व पटल पर एक आकर्षक एवं महत्वपूर्ण स्थान बन कर उभर रही है। परिणाम स्वरूप भारत के लिए विदेशी पर्यटकों से विदेशी मुद्रा अर्जित करने का यह एक अच्छा साधन बन गया है। भारत में प्रतिवर्ष आने वाले विदेशी पर्यटकों से प्राप्त विदेशी मुद्रा आज देश की समस्त आय का तीसरा बड़ा और प्रमुख स्रोत अर्जित करने वाला साधन बन गयी है।

पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए भारत सरकार के पर्यटन, पुरातत्व और नागरिक उड्डयन तीनों विभाग मिलकर विकास और सुविधायें जुटाने की दिशा में विशेष क्रियाशील होने के साथ–साथ पर्यटकों की जानकारी के लिए सचित्र साहित्य भी प्रकाशित करते हैं तथा पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए विदेशों में अनेकों प्रकार के सांस्कृतिक आयोजनों एवं गोष्ठियों का आयोजन भी कराते हैं। इन्हीं तथ्यों के आलोक में भारत का पर्यटन उद्योग काफी पनप और फल–फूल रहा है। इसीलिए भारत में आज यह उद्योग विशेष महत्वपूर्ण एवं लाभदायक कहा जा सकता है। भारतीय पर्यटन को वर्ल्ड ट्रेवल एवं टूरिज्म काउंसिल ने विश्व में सबसे तीव्र गति से विकसित होते हुये बाजार की मान्यता प्रदान की है।

उत्तरप्रदेश राज्य के लिए आर्थिक संसाधन जुटाने तथा रोजगार सृजन की दृष्टि से पर्यटन उद्योग को अत्यधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में विकसित करने की यहाँ पर्याप्त सम्भावनायें व्याप्त हैं क्योंकि सम्पूर्ण राज्य में ऐसे अनेक स्थल उपलब्ध हैं जो समस्त आयु वर्ग के पर्यटकों को सन्तुष्ट करने में सक्षम हैं लेकिन राज्य में इस उद्योग का आशानुकूल विकास नहीं हो पाया है। राज्य सरकार पर्यटन विकास में आने वाली विभिन्न बाधाओं को प्राथमिकता के आधार पर दूर करने का प्रयास कर रही है। इसी परिपेक्ष्य में फरवरी 1999 में अधिसूचना जारी करके उत्तरप्रदेश सरकार ने पर्यटन को राज्य में उद्योग का दर्जा प्रदान किया। पर्यटन गतिविधियों का समुचित विकास करने की दृष्टि से सरकार एवं निजी क्षेत्र की समुचित भागीदारी विकसित करने के दिन–प्रतिदिन प्रयास किये जा रहे हैं। सरकार के मुख्य कार्य क्षेत्र में आवश्यक मूलभूत आधारिक सुविधाओं जैसे अच्छी सड़कों एवं परिवहन के विभिन्न साधनों, बिजली और पानी की पर्याप्त पूर्ति, संचार व्यवस्था आदि की व्यवस्था करना सम्मिलित हैं तथा दूसरी ओर इन सुविधाओं के विकास के आधार पर पर्यटन विकास हेतु होटल, रेस्टोरेन्ट आदि का निर्माण, मनोरंजन के विभिन्न साधनों, पर्यटकों की सुख–सुविधाओं से सम्बन्धित अन्य अनेकों विकास के कार्यो को निजी क्षेत्र द्वारा सम्पन्न कराना सम्मिलित है। इस प्रकार निजी क्षेत्र के लिए अच्छी कार्य दशायें एवं प्रोत्साहन उपलब्ध कराना सरकार का कार्य है तथा गंतव्य स्थानों को पर्यटको के लिए आकर्षक बनाने का कार्य निजी क्षेत्र का है। सांस्कृतिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण एवं रख–रखाव हेतु सरकार द्वारा विकास निधि का गठन किया गया है। वर्तमान समय में राज्य सरकार, निजी क्षेत्र एवं अन्य संस्थानों के सम्मिलित सहयोग से देश

की अविभाज्य सभ्यता, संस्कृति एवं परम्परा पर आधारित उत्तरपद्रेश में एक समन्वित पर्यटन चक्र बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश सरकार अपने सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों की पहचान करके उनको पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने की परियोजना पर कार्य कर रही है लेकिन अभी तक कुछ ही पर्यटक स्थलों पर पर्यटन नीति का क्रियान्वयन देखने को मिलता है जैसे– कुशीनगर, सारनाथ, वाराणसी, प्रयागराज, अयोध्या, आगरा, मथुरा आदि। अध्ययन क्षेत्र में पर्यटक स्थलों के रूप में विकसित योग्य ऐसे बहुत सारे स्थल हैं जिनका पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व है। मेरठ तथा बागपत जनपदों में अनेक स्थानों पर हमारी प्राचीन सभ्यता, रामायण तथा महाभारत कालीन युग के राजनैतिक एवं सांस्कृतिक अवशेष फैले हुये हैं। इन स्थानों को विकसित कर राष्ट्रीय पटल पर स्थापित किया जा सकता है जिनका अन्तर्राष्ट्रीय महत्व होगा। आज भी समस्त भारतीय जनमानस तथा भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का ज्ञान रखने वाले पर्यटक इन स्थानों के महत्व को स्वीकार करते हैं। वें इनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहरों से परिचित होना चाहते हैं, परन्तु अच्छे पर्यटक केन्द्र पर होने वाली आधारिक सुविधाओं के अभाव के कारण यहाँ पर विस्तृत स्तर पर पर्यटकों का आना–जाना कम है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के निकट स्थिति तथा ऐतिहासिक स्थलों की भरमार होने के कारण यहाँ पर्यटन की सम्भावनाओं एवं उससे सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करने हेतु ही मेरठ–बागपत जनपदों का अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मेरठ–बागपत जनपदों में पर्यटन योग्य पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्थलों की पहचान करना।
2. मेरठ–बागपत जनपदों में चिन्हित पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्थलों की प्रामाणिकता ज्ञात करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन की सम्भावनायें तलाश करना।
4. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन की समस्याओं की रेखांकित करना।
5. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन की समस्याओं के निराकरण का मार्ग प्रशस्त करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोद्यार्थी ने विवरणात्मक एवं ऐतिहासिक अनुसंधान प्रविधियाँ के प्रत्यक्ष (Perspective) एवं पश्चातदर्शी (Retrospective) दोनों अभिगमों (Approaches) का प्रयोग किया है। शोधार्थी ने स्वयं सर्वेक्षण करके, भग्नावशेष एवं खण्ड़हरों को देखकर स्थानीय व्यक्तियों की सूचनाओं के आधार पर, पौराणिक एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों, पुरातत्व विभाग के अभिलेखों एवं वैज्ञानिक प्रमाणों का अध्ययन करके मेरठ और बागपत जनपदों के पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्थलों की पहचान करके उनकी प्रामाणिकता की जांच की है।

चित्र 1

प्रयुक्त शब्दावली			
1.	पर्यटन	:	देश दर्शन और मनोरंजन के लिए विभिन्न स्थलों का भ्रमण।
2.	पौराणिक स्थल	:	प्रागैतिहासिक स्थल।
3.	ऐतिहासिक स्थल	:	इतिहास में वर्णित स्थल।
4.	सांस्कृतिक स्थल	:	संस्कृति की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल।
5.	धार्मिक स्थल	:	धर्म से सम्बन्धित स्थल।

अध्ययन क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थल

अध्ययन क्षेत्र में हमारे भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं परम्परा के अनेकों महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं धार्मिक महत्व के स्थल विद्यमान हैं जिनको विकसित करके पर्यटन की दृष्टि से रोजगार तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण पर्यटक क्षेत्रके रूप में विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार के क्रिया–कलापों से गुणक प्रभाव विकसित होकर स्थानीय रोजगार तथा अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करेगा।

1. **हस्तिनापुरः** हस्तिनापुर नगर मेरठ जनपद मुख्यालय से उत्तर दिशा मे 35 किलोमीटर की दूरी पर बुढ़ी गंगा के तट पर बसा हुआ है। महाभारत ग्रंथ तथा पुराणों से प्राप्त सूचनाओं के अनुसार ऐतिहासिक भारतीय नरेश दुष्यन्त के पुत्र भरत एवं राजा हस्ति से लेकर महाभारत युद्ध के समय कौरवों और पाण्डवों की राजधानी रहा है जहां से भीष्म पितामह, धर्तराष्ट्र, युधिष्ठिर, दुर्योधन, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, विदुर, द्रौपदी आदि की यादें जुड़ी हुयी है। पुराणों में कहा गया है कि जब गंगा की बाढ़ के कारण यह राजधानी नष्ट हो गयी तो पांड़व हस्तिनापुर छोड़कर कौशाम्बी चले गये। बुढ़ी गंगा के तट पर द्रौपदी रसोई तथा द्रौपदी घाट आज भी अवस्थित हैं जहाँ पर लोग धार्मिक उत्सवों एवं पर्वों पर स्नान करने आते हैं। हस्तिनापुर जैन परम्परा के अनुसार जैन नगरी के रूप में विख्यात रहा है। यह प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभ देव का कार्य स्थल रहा है। कहा जाता है कि ऋषभदेव के पुत्र सोमप्रभ हस्तिनापुर राज्य के प्रथम शासक थे। हस्तिनापुर के आधुनिक मन्दिरों और भवनों में जम्बूद्वीप एवं भगवान महावीर का कमल के फूल के आकार का भव्य मन्दिर भी विद्यमान है। यहाँ पर जैनियों का प्रसिद्ध दानतीर्थ है। यहाँ एक मन्दिर जैन धर्म के तीर्थकर शान्तिनाथ को समर्पित है जहाँ तीसरे तीर्थंकर आदिनाथ ने 400 दिन उपवास रखा था। एक मन्दिर जैन श्वेताम्बर तीर्थंकर विमलनाथ को समर्पित है जिसके चारों ओर किनारे पर चार कल्याणक के प्रतीक हैं। यहाँ पर मेरठ तथा अन्य समीपवर्ती जनपदों में विस्तरित हस्तिनापुर वन्य जीव विहार भी स्थित है। यहाँ की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति भारतीय जनमानस में आज भी गहरी आस्था एवं जिज्ञासा विद्यमान है। एक फरवरी 2020 को मोदी सरकार ने हस्तिनापुर के लिए 500 करोड़ के पैकेज की घोषणा की थी लेकिन आज तक यहाँ के लोगों को उस बजट की प्रतिक्षा है। यहाँ के उल्टाखेड़ा पांडव टीले पर आज भी कई रहस्य दफन है।

2. **मेरठः** मेरठ नगर देश की राजधानी दिल्ली के उत्तर पूर्व में 72 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। ऐतिहासिक स्रोतों एवं पुरातात्विक खुदाई के अनुसार महाभारत कालीन पाण्डवों ने इस भू–भाग पर इन्द्रप्रस्थ नगर का निर्माण कराया था जो बहुत पहले गंगा नदी की बाढ़ में बह गया था। तीसरी शताब्दी ईसापूर्व महान मौर्य सम्राट अशोक ने अपने एक महत्वपूर्ण शिलालेख को यहाँ स्थापित कराया था। यहाँ के भैंसाली स्थित शहीद स्मारक की जगह कभी सती सरोवर था। यह कहा जाता है कि मय दानव की पुत्री मंदोदरी रावण की पटरानी बनने तक शंकर–पार्वती की पूजा करने के लिए इस सती सरोवर में स्नान करके बिल्वेश्वर नाथ मन्दिर में पूजा–अर्चना करने के लिए जाती थी। यह मन्दिर इस समय नया रूप ले चुका है। मन्दिर में विद्यमान शिवलिंग बहुत घिस चुका है जिससे उसकी प्राचीनता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। मन्दोदरी के पिता मय जो राक्षसों के वास्तुकार थे, के नाम पर इसका प्राचीन नाम मयराष्ट्र था जो समय के साथ बिगड़कर मेरठ हो गया। मेरठ में सूरजकुंड नामक जलाशय का निर्माण 1714 ई0 में लावड़ के जवाहर लाल नामक व्यापारी ने कराया था जिसके चारों ओर बने हुये मन्दिरों से तालाब सुशोभित है। मन्दिरों में मुख्य रूप से मनसा देवी का मन्दिर तथा तालाब के पश्चिम की ओर आदमकद संगमरमर की गौतम बुद्ध की मूर्ति सुशोभित है। सूरजकुण्ड के थोड़ी दूरी पर चण्डी देवी का मन्दिर है और मन्दिर के निकट ही 1194ई0 में कुतुबद्दीन ऐबक द्वारा बनायी गयी बाले मियाँ की दरगाह है। यहीं पर प्रतिवर्ष मार्च–अप्रैल में नौचंदी का मेला लगता है जो हिन्दु–मुसलमान के धार्मिक सौहार्द की महान निशानी हैं। हसनमेंहदी की मस्जिद भी एक प्रमुख धार्मिक स्थल है। इसके अतिरिक्त मेरठ में अन्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों की भी अधीकता है जिन पर मुगल कालीन स्थापत्य एवं वास्तुकला की बेजोड़ प्रस्तुति है। यहाँ 1819 में चेपलिन रेव हेनरी फिशर द्वारा बनाये चर्च की गणना उत्तर भारत के सबसे प्राचीन चर्चों में की जाती है। इस विशाल चर्च में 10 हजार व्यक्तियों की बैठने की क्षमता है।

स्वतन्त्रता संग्राम की पहली लड़ाई 1857 की भी अनेकों निशानियाँ मेरठ में आज भी विद्यमान हैं। यहीं के बाबा औघड़नाथ के मन्दिर में 10 मई 1857 को भारतीय सैनिकों ने देश को स्वतन्त्र कराने की शपथ लेकर अंग्रेज शासन के विरूद्ध क्रान्ति की घोषणा की थी। भैंसाली मैदान में लगभग 30 मीटर ऊंची संगमरमर की मीनार (शहीद स्मारक) है जहाँ पर प्रत्येक राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करके लोग देश के लिए प्राण–न्यौछावर करने वालों को आज भी याद करते हैं। मेरठ में मुख्य रूप से कुटीर उद्योगों एवं लघु औद्योगिक इकाइयों की भी प्रचुर मात्रा में उपस्थिति हैं। यहाँ के बने खेल के सामान एवं कैंची राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हैं। यहाँ हस्तकला तथा दस्तकारी का भी पर्याप्त विकास हुआ है। बुनकरों की तकनीकी तथा डिजाइन में विकास के लिए एक बुनकर सेवा केन्द्र तथा एक लघु उद्योग सेवा संस्थान में चमड़े की वस्तुयें बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ वृहत एवं मध्यम उद्योगों की भी अनेकों इकाईयाँ स्थापित हें। मेरठ का सर्राफा बाजार एशिया का नम्बर एक का व्यवसाय बाजार है। मेरठ वाद्य यन्त्रों के निर्माण में भी प्रमुख स्थान रखता है।

3. **बागपतः** बागपत नगर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से उत्तर में 50 किलोमीटर दूरी पर यमुना नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित है जो देश के अन्य भागों से सड़क एवं रेलमार्गो से जुड़ा हुआ है। यह नगर महाभारत काल में हस्तिनापुर राज्य का अभिन्न भाग रहा है जो उस समय महाभारत कथा से सम्बन्धित तकारांत पांच ग्रामों–सोनीपत, पानीपत, मारीपत, इन्द्रप्रस्थ तथा व्याघ्रप्रस्थ में से एक माना गया है। इसके नाम की व्यूत्पत्ति के सम्बन्ध में मत–प्रचलित है कि इसका नाम व्याघ्रप्रस्थ (बाघों का स्थान) का अपभ्रंश मुगल काल में बाघपत तथा 1857 के पश्चात् बागपत नगर के रूप में विकसित हुआ। यहाँ पर एक प्राचीन मन्दिर पक्का घाट का मन्दिर नाम से प्रसिद्ध है जहाँ पर फाल्गुन महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी और कार्तिक पूर्णिमा के दिन मेलों का आयोजन होता है जिनका धार्मिक एवं व्यवसायिक महत्व है। इन अवसरों पर बहुत अधिक संख्या में जनता यमुना नदी में स्नान करके मन्दिर में पूजा–अर्चना करती है तथा अपनी आवश्यकता का सामान खरीदने के साथ ही विभिन्न साधनों से मनोरंजन करते हैं। यहाँ के मुख्य उद्योग में गुड़, चीनी के अतिरिक्त कैंची, जूते बनाने तथा कृषि–यन्त्रों का निर्माण किया जाता है। बागपत की फल–पट्टी क्षेत्र के आम विश्व विख्यात हैं।

4. **परीक्षित गढ़ः** परीक्षितगढ़ जो किला परीक्षितगढ़ के नाम से भी जाना जाता है, मेरठ से 22 किलोमीटर उत्तर–पूर्व तथा हस्तिनापुर से 15 किलोमीटर दक्षिण–पूर्व में स्थित हैं। यहाँ महाभारत कालीन अर्जुन के पौत्र परीक्षित के द्वारा एक किले का निर्माण कराया गया था। उसी किले के अवशेषों पर गूर्जर राजा नैन सिंह द्वारा नये किले का निर्माण कराया गया था जिसे 1857 ई0 में अंग्रेजों द्वारा तुड़वा दिया गया था। इसी किले की राजमहल की सीढ़ी के नीचे 1916 ई0 में खजाना प्राप्त हुआ था जिसमें अधिकांशतः चांदी के सिक्के दिल्ली सम्राट शाह आलम द्वितीय के समय के पाये गये। यहाँ के गांधारी तालाब का नाम धर्तराष्ट्र की पत्नी गांधारी के नाम से पड़ा है। उस समय परीक्षितगढ़ से छः किलोमीटर दूर श्रृंग ऋषि का आश्रम था जो वर्तमान में एक मन्दिर के रूप में परिवर्तित हो गया है। कहा जाता है कि इसी आश्रम में महर्षि वेद व्यास ने महाभारत ग्रंथ के उत्तरार्द्ध भाग की रचना की थी। परीक्षितगढ़ के नवल देहूँ नामक कुआँ के पानी के विषय में मान्यता है कि इस पानी से स्नान करने से कोढ़ का रोग ठीक हो जाता है। किंवदन्ती इस प्रकार है कि कोढ़ ग्रस्ति नागराज वासुकी के घर एक कन्या का जन्म हुआ जिसके बारे में कर्मकाण्ड़ी व्यक्तियों द्वारा वासूकी ने यह जानकर कि यह कन्या उसके दुःखों का कारण बनेगी, उसको अंधेरी कोठरी में डाल दिया। इसी लड़की द्वारा एक दिन एक कुंए के लाये गये जल से स्नान करने पर वासूकी का कोढ़ ठीक हो गया। वह यही नवल देहूँ कुंआ माना जाता है। राजा परीक्षित को इस लड़की से प्रेम हो गया। परीक्षित के इस आचरण से उत्तेजित होकर वासुकी ने उससे युद्ध किया जिसमें परीक्षित की मृत्यु हो गयी। अपने पिता के इस कृत्य से खिन्न होकर नवल देहूँ नामक उसकी पुत्री इसी कुंऐ के अन्दर गुप्त हो गयी। यहाँ प्रति वर्ष श्रावण महिने में छड़ियों का मेला लगता है जिसमें अधिक संख्या में दर्शनार्थी अपनी मन्नत पूरी कराने के लिए आते हैं।

5. **बरनावाः** बरनावा हिन्डन एवं कृष्णा नदी के संगम पर मेरठ के पश्चिम में 36 किलोमीटर की दूरी पर बसा हुआ है। बरनावा की पहचान महाभारत में उल्लेखित वार्णावृत्त से की गयी है। यहाँ महाभारत के समय दुर्योधन ने पांडवों को

मारने के लिए लाख का एक किला बनवाया था जिसमें प्रवेश करने के उपरान्त लाख से निर्मित वह किला जलकर खाक हो गया था और दैवीय कृपा से पाण्डव एक सुरंग के माध्यम से निकलकर जीवित बच गये थे। यहाँ 30 एकड़ में फैले 10 फीट ऊंचे टीले के रूप में इसका जीर्ण–शीर्ण स्वरूप वर्तमान में भी विद्यमान हैं जहाँ प्राचीन वास्तुकला एवं प्राचीन सुरंग के अवशेष देखने को मिलते हैं। यहाँ टीले के सर्वोच्च भाग पर बुद्धुद्दीन शाह और मखदूम शाह अलाउद्दीन दो संतों की दरगाह 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बनवायी गयी थी। टीले के एक भाग में वर्ष 1960–61 में एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की गयी जिसमें वर्तमान समय में विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति के आधार पर वैदिक ज्ञान एवं ब्रह्मचर्य की शिक्षा प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त बरनावा की बस्ती में पीर सरवर का मकबरा है जिसके द्वार पर 948 हिजरी (1541–42) वर्ष दर्शाता हुआ पार्शियन अभिलेख है। यहाँ मोहर्रम के अवसर पर तीन दिन का मेला भी लगता है। इस स्थान के मुख्य उद्योग, गुड़, हथकरघा वस्त्र और जूते बनाना है।

6. **बहसूमाः:** बहसूमा मेरठ के उत्तर–पूर्व में 35 किलोमीटर की दूर पर स्थित है। महाभारत कालीन समय में बहसूमा प्राचीन हस्तिनापुर का एक भाग था जहाँ कौरवों और पाण्डवों का खजाना रखा जाता था। इस स्थान की व्यूत्पत्ति 'वसू' से हुयी है जिसका अर्थ है खजाना। परीक्षितगढ़ के गूर्जर राजा नैन सिंह ने 'वसू' को अपना मुख्यालय बनाया था और यहाँ एक किले का निर्माण किया था। यहाँ के मुख्य उद्योग गुड़ और खादी वस्त्र बनाना है।
7. **मवानाः** मवाना मेरठ के उत्तर में 22 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। स्थानीय परम्परा के अनुसार मवाना का नाम कौरवों के प्रसिद्ध सेवक और शिकारी मान के नाम पर पड़ा। एक अन्य विवरण के अनुसार यह स्थान हस्तिनापुर नगर का एक मुहाना (द्वार) था जो बाद में मवाना बन गया। यहाँ बहसूमा मार्ग पर एक पक्का तालाब है जो जानसठ के केशवदास नामक व्यक्ति ने बनवाया था। इसके अतिरिक्त नगर में 17 मन्दिर, 21 मस्जिदें, 32 ईमामबाड़ें, एक गुरूद्वारा, एक अशोक स्तम्भ, चौहानों की चौपाल, जैसीज कल्ब आदि विद्यमान हैं। यहाँ भारत की तीसरे नम्बर की चीनी मिल स्थित हैं।
8. **पुरा महादेवः** यह बागपत जनपद में बागपत–मेरठ सड़क से तीन किलोमीटर उत्तर में, बागपत से 28 किमी0 पूर्व में तथा मेरठसे पश्चिम में 32 किमी0 की दूरी पर हिन्डन नदी के पश्चिमी तट पर बसा हुआ है। स्थानीय परम्परा के अनुसार परशूराम ऋषि नें यहाँ एक मन्दिर स्थापित किया था और इस मन्दिर का नाम शिवपुरी रखा था जो बाद में क्रमशः शिवपुरा, छोटा पुरा तथा पुरा महादेव हो गया। पुरा महादेव का धार्मिक दृष्टि से बहुत बड़ा महत्व है। यहाँ पर श्रावण माह में महाशिवरात्रि को परम्परा के अनुसार शिवभक्त हरिद्वार से पुरा महादेव तक लगभग 160 किमी0 तक पैदल यात्रा करके कावड़ में गंगाजल लाकर मन्दिर में स्थित शिवलिंग का जलाभिषेक करते हैं। इन शिव भक्तों को कावड़िया के नाम से पुकारा जाता है। जिनकी संख्या लाखों में होती है तथा प्रतिवर्ष इन कावड़ियों की संख्या मेंवृद्धि होती जा रही है। यहाँ वर्ष में एक बार श्रावण माह में तथा दूसरी बार फाल्गुन माह में शिवरात्रि के अवसर पर दो बार हरिद्वार से लाकर गंगाजल चढ़ाया जाता है।ऐसी मान्यता है कि पैदल हरिद्वार से लाये गये कावड़ में गंगा जल से इस मन्दिर में स्थित शिवलिंग का जलाभिषेक करके से व्यक्ति की हृदय में सोची हुयी मान्यता पूरी हो जाती है।
9. **बड़ागांवः** बड़ागाँव मेरठ के दक्षिण–पश्चिम में 55 किमी0 तथा बागपत से दक्षिण–पूर्व में 18 किमी0 की दूरी पर मेरठ–पिलाना–खेकड़ा मार्ग पर स्थित है। ऐसा माना जाता है लंकाधिपति रावण ने रावणा उर्फ बड़ागांव को स्थापित किया था। लगभग 30 वर्ष पूर्व यहाँ खुदाई में जैन धर्म से सम्बन्धित कुछ मूर्तियाँ और तस्वीरें प्राप्त हुयी थी। उसी स्थान पर यहाँ पार्श्वनाथ जैन तीर्थंकर को समर्पित बड़ा भव्य जैन मन्दिर का निर्माण हुआ है। वर्तमान समय में यहाँ पर मन्दिर निर्माण समिति द्वारा एक शिक्षण संस्था भी चलायी जा रही है। वर्तमान में यह स्थान केवल जैनधर्म के लोगों के लिए बल्कि सभी धर्म के लोगों के लिए एक दर्शनीय एवं धार्मिक स्थल के रूप में विकसित हो गया है।
10. **बालैनीः** बालैनी मेरठ नगर के पश्चिम में 28 किमी0 तथा बागपत के पूर्व में 24 किमी0 के दूरी पर मेरठ–बागपत सड़क के दक्षिण में हिन्डन नदी के पश्चिमी तट पर बसा हुआ है। कहा जाता है कि यहाँ वाल्मीकि ऋषि का आश्रम था जहाँ प्रभु श्री राम के द्वारा दिये गये वनवास के समय सीता ने निवास किया था। इसी आश्रम में उन्होनें लव और कुश्दो पुत्रों को जन्म दिया था। यहाँ हिन्डन नदी के पश्चिमी तट पर स्थित एक ऊंचे टीले पर स्थित वाल्मीकि मन्दिर के समीप धार्मिक चिन्हांकित प्राचीन पक्की ईंटे पायी गयी थी। वर्ष 1976–77 में यहाँ पर एक गुरूकुल की स्थापना की गयी थी जिसमें वर्तमान समय में विद्यार्थी रात–दिन यही पर रहकर संस्कृत, वैदिक ज्ञान, ब्रहमचर्य तथा योग की भारतीय संस्कृति के आधार पर शिक्षा प्राप्त करते हैं। स्थानीय परम्परा के अनुसार इस ग्राम के रक्षक पांच देवता हैं जिनमें से एक ग्राम के मध्य तथा चार ग्राम की चारों की सीमाओं पर निवास करते हैं। यहाँ हिन्डन नदी के किनारे पौष माह के 18वें दिन तथा वाल्मीकि ऋषि के सम्मान में वाल्मीकि जयन्ती पर दो मेलों का आयोजन किया जाता है जिनमें बहुत बड़ी संख्या में दर्शनार्थी आते हैं।
11. **सरधनाः** सरधना मेरठ नगर से उत्तर–पश्चिम में 21 किमी0 की दूरी पर अपर गंग नहर के पश्चिम में बसा हुआ है। स्थानीय परम्परा के अनुसार सरधना राजा सर्कट द्वारा स्थापित किया गया था और मुसलमानों के आगमन तक इन्हीं के अधिपत्य में बना रहा। वाईटल रेनहार्ड को 1778 ई0 में यह स्थान जागीर के रूप में प्राप्त हुआ जो उसके बाद उनकी पत्नी बेगम समरू की जागीर बनी। बेगम समरूने यहाँ रोमन कैथोलिक ईसाइयों का एक विशाल एवं विख्यात चर्च का निर्माण 1822ई0 में कराया गया था। यह चर्च रानी मैरी को समर्पित हैं। इस चर्च का डिजाइन इटालियन वास्तुकार रधोलिनी ने तैयार किया था। इस चर्च में संगमरमर पर तरासी गयी मुख्य मूर्ति बेगम समरू की विद्यमान हैं जो इटली में बनायी गयी थी। यहाँ नवम्बर के दूसरे रविवार तथा 25 दिसम्बर को भव्य मेलों का आयोजन किया जाता है। इस चर्च में देश–विदेश से लाखों धर्मावलम्बी दर्शनार्थ एवं पूजा–अर्चना करने प्रति वर्ष आते रहते हैं।
12. **अन्य दर्शनीय ऐतिहासिक स्थलः** उपरोक्त वर्णित स्थानों के अतिरिक्त मेरठ और बागपत जनपदों में अनेकों ओर ऐसे ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थल हैं जो स्थानीय पर्यटकों के केन्द्र के रूप में विकसित हुये है। मेरठ से पश्चिम में 20 किमी0 दूरी पर हिन्डन नदी के किनारे स्थित आलमगीरपुर तथा बागपत से उत्तर–पश्चिम में 24 किमी0 दूरी पर बड़ौत–टांड़ा सड़क पर स्थित सिनौली ग्रामों में खुदाई के समय प्राप्त अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता के पूर्वी विस्तार की पुष्टि करते हैं। यह स्थल उत्तर हड़प्पा और मोहनजोदड़ों सभ्यता का भी केन्द्र था। बागपत से उत्तर पश्चिमी में 32

किमी0 दूरी पर हिन्डन नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित कोताना ग्राम के बारे में कहा जाता है कि पाण्डू पत्नी कुन्ती ने विवाह से पूर्व यहां यमुना के तट पर सूर्य देव की तपस्या की थी जिसके फलस्वरूप उसे कर्ण पुत्र के रूप में प्राप्त हुआ। इससे उस स्थान का नाम कुन्ताना से अपभ्रंश होकर कोताना हो गया। खरखौदा ग्राम के बारे में कहा जाता है कि यहहस्तिनापुर राज्य के राजाओं की खरक थी। कालान्तर में इस खरक शब्द से इसे खरखौदा कहा जाने लगा। एक अन्य परम्परा के अनुसार लंकाधिपति रावण के खर और दूषण इस स्थान से सम्बन्धित थें। करनावल ग्राम के बारे में कहा जाता है कि महाभारत के राजा कर्ण हस्तिनापुर जाते समय यहाँ ठहरे थे। भारत छोड़ों आन्दोलन के समय 1942 ई0 में करनावल निकटवर्ती 15 ग्रामों का केन्द्र था। यहाँ के लगभग 150 व्यक्तियों ने आन्दोलन में भाग लेकर अंग्रेजों को अपनी गिरफ्दारी देकर शहादत दी थी। बड़ौत, खेकड़ा, छपरौली, अब्दुल्लापुर, बावली, बिजरौल, नंगली तीर्थ, सरूरपुर, लावड़, सैफपुर, किठौर, अमीनगर सराय, फलावदा आदि अनेकों स्थान ऐतिहासिक, धार्मिक, औद्योगिक, प्रशासनिक अथवा अन्य दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं जिनको सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित कर स्थानीय एवं बाह्य पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन की सम्भावनायें

उपरोक्त वर्णित महत्वपूर्ण स्थलों के विवेचन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अध्ययन क्षेत्र में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का एक बहुत बड़ा खजाना विद्यमान है और साथ ही जैन धर्मावलम्बी, हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाइयों के लिए अनेकों प्राचीन महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल विद्यमान है जिनमें भारतीय संस्कृति एवं परम्परा की जड़े गहराई तक समायी हुयी हैं और प्रत्येक जागरूक एवं देशाटन करने वाले पर्यटक के लिए यह एक जिज्ञासा एवं रूचि का विषय हो सकता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास की पर्याप्त सम्भावनायें विद्यमान हैं। वर्तमान में उत्तरप्रदेश सरकार की नवीन पर्यटन नीति के क्रियान्वयन होने के लिए यह क्षेत्र उपयुक्त है। सरकार एवं निजी उद्यमियों का यहाँ यह प्रयास होना चाहिये कि इस क्षेत्र में ऐसी आधारभूत सुविधायें उपलब्ध करायी जाये कि यहाँ के पर्यटन स्थल राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर प्रसिद्ध हों। यद्यपि इसमें धन का व्यय अधिक होगा लेकिन भविष्य में इसके परिणाम बहुत अच्छे प्राप्त होगें और दीर्घकाल में यह एक लाभकारी और आर्थिक दृष्टि से मजबूत स्थिति को प्रदर्शित भी करेगा। अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन उद्योग का विकास आज की आवश्यकता है जिससे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था एवं समाज को अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा और पर्यटकों को मानसिक संतुष्टि प्राप्त होगी। इसके साथ ही इससे प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनो का उचित विदोहन तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष व्यवसायों में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा भी प्राप्त होगा।

अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन उद्योग की समस्यायें

प्राचीन समय में हमारे देश में ऐतिहासिक एवं तीर्थ पर्यटन प्रमुख रूप से सादा एवं सरल आचरण, नैतिकता, पारिस्थितिक स्वच्छता तथा स्वः नियन्त्रित अनुशासन गुणों से सम्पन्न था, इसके विपरीत वर्तमान समय का तीर्थाटन अनेक समस्याओं से ग्रसित हो गया है, लोगों की भक्ति भावना और मानवीय भावना के ह्यस ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन की सम्भावनाये अपरम्पार हैं लेकिन निम्नलिखित समस्याओं ने यहाँ पर पर्यटन उद्योग को प्रभावित किया है–

1. पर्यटन स्थल पर आवश्यक आधारिकएवं परिवहन सुविधाओं का अभाव है।
2. पर्यटन स्थल के उपयुक्त मानचित्र का अभाव है।
3. घरेलू एवं विदेशी को उचित जानकारी प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित मार्ग दर्शकों तथा कुशल एवं प्रशिक्षित गाइड़ों का अभाव है।
4. विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्यटन क्षेत्र का वायुमार्ग से जुड़ा न होना। मेरठ में हवाई पट्टी होते हुये भी एक लम्बे समय से सरकारी आश्वासनों के उपरान्त भी वह हवाई अड्डा के रूप में विकसित होने की प्रतिक्षा कर रहा है।
5. सडक परिवहन के लिए उपयुक्त सड़कों तथा स्थानीय परिवहन सुविधाओं का अभाव है।
6. पर्यटक स्थलों पर पर्याप्त एवं वांछित धर्मशालाओं, रेस्टोरेन्ट और होटलों का अभाव है।
7. पर्यटन स्थलों पर आवश्यक जल एवं विद्युत आपूर्ति में अनियमितता है।
8. पर्यटन स्थलों की ऐतिहासिकता, धार्मिक मेलों और प्रदर्शनियों का प्रभावशाली विज्ञापन न होना।
9. पर्यटन स्थलों पर आवश्यक वस्तुओं तथा खान–पान की प्रमाणित वस्तुओं का अभाव है अगर कहीं पर इस प्रकार की वस्तुयें हैं भी तो उनका अनावश्यक महंगा होना।
10. ऐसे सूचना केन्द्रों का अभाव जहाँ पर यहाँ के सम्पूर्ण पर्यटन स्थलों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध हो सके।
11. पर्यटन स्थल पर स्वच्छता का अभाव है तथा स्थानीय सौन्दर्य एवं पर्यावरण संरक्षण का ध्यान नहीं रखा जाता है। जगह–जगह कूड़ा–करकट के ढेर देखने को मिलते हैं तथा मल–जल निकासी की सुविधाओं का अभाव है।
12. पर्यटन स्थलों पर रूढ़िवादी व्यक्तियों तथा भिखारियों द्वारा पर्यटकों को परेशान करना।
13. निजी टूर आपरेटर एवं टैक्सी चालकों के द्वारा पर्यटकों का शोषण किया जाता है।
14. पर्यटन सुविधाओं का सृजन करने वाली संस्थाओं को अनेक कार्यालयों के चक्कर काटने का मजबूर होना पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन के तीव्र विकास के लिए सुझाव

पर्यटन उद्योग का यहाँ की अर्थव्यवस्था में महत्व तथा पर्यटन के विकास की पर्याप्त सम्भावनाओं को देखते हुये अध्ययन क्षेत्र में इसकी अत्यन्त धीमी प्रगति निश्चय ही विचारणीय है। आवश्यकता है पर्यटकों के सम्मुख आने वाली विभिन्न समस्याओं का शीघ्रातिशीघ्र निराकरण करने के लिए सशक्त योजनाओं के निर्माण और उनका सुनियोजित ढंग से क्रियान्वयन करने की जिससे अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन के समस्त स्रोतों का समुचित विदोहन किया जा सके तथा क्षेत्र को

उन ऊँचाइयों तक पहुंचाया जा सके जहाँ पहुँचने की क्षमता अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान हैं। अतः देश एवं विदेशी पर्यटकों को अधिक से अधिक आकर्षित करने के लिए अध्ययन क्षेत्र में निम्नलिखित प्रयासों की नितान्त आवश्यकता है–

1. क्षेत्र में पर्यटन उद्योग के सम्बन्ध में वर्तमान नीतियों के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है जिससे पर्यटन उद्योग एवं सम्बन्धित सहायक क्षेत्रों के स्वरूप में विकास कार्यो के लिए प्रभावपूर्ण नीति का निर्धारण अधिक सुनियोजित ढंग से किया जा सके।
2. क्षेत्रीय स्तर पर अपनी भूमिका और दायित्वों का निर्वाह करते हुये निजी क्षेत्र एवं सार्वजनकि क्षेत्र को पर्यटन उद्योग के विकास के लिये विस्तृत स्तर पर कार्यक्रम बनाने चाहिये।
3. क्षेत्र के समस्त पर्यटक स्थलों पर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए स्वस्थ वातावरण एवं समस्त वांछित आधारिक सुविधाओं का सुनियोजित ढंग से निर्माण किया जाना चाहिये।
4. धर्मशालाओं, होटलों के संचालन, परिवहन एवं अन्य सम्बन्धित क्षेत्रों में निजी क्षेत्र को अधिकाधिक प्रवेश देना चाहिये जिससे पर्यटन से सम्बन्धित व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं की गुणवत्ता में वृद्धि हो सके। साथ ही इन क्षेत्रों में सस्ती एवं सुविधापूर्ण सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।
5. स्थानीय व्यक्तियों को पर्यटन से जोड़ा जाना चाहिए तथा 'पेइंग गेस्ट' के चलन का प्रसार होना चाहिए।
6. क्षेत्र के पर्यटन के व्यवस्थित विकास के लिए ऐसे पेशेवर व्यक्तियों की आवश्यकता है जो क्षेत्र के ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों की अधिकाधिक जानकारी रखते हों। साथ ही देश–विदेश में ऐसे सूचना केन्द्रों को विकासित किया जाना चाहिए जहाँ पर अध्ययन क्षेत्र के सम्पूर्ण पर्यटन स्थलों के सम्बन्ध में अधिकाधिक सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध हो सके।
7. क्षेत्र के पर्यटन उद्योग को विशेष रूप से विकसित करने के लिए व्यय की जाने वाली राशि वांछित मात्रा में सुनिश्चित की जानी चाहिये तथा राज्य सरकार का नियन्त्रण तन्त्र इतना सशक्त एवं प्रभावी होना चाहिए कि समस्त अभिकरणों द्वारा चलाये जा रहे विकास कार्य निर्धारित योजनावधि में सुचारू रूप में सही ढंग से आवंटित राशि के सदुपयोग के साथयोजनानुसार पूर्ण हों।
8. पर्यटन एक सांस्कृतिक प्रघटना है, की अपेक्षानुसार समस्त पर्यटकों के साथ समान व्यवहार, पर्यावरणीय घटकों, स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों और कौशलों पर आधारित वव्यवस्था एवं सूचना प्रौद्योगिकी को विकसित करके प्रत्येक पर्यटक स्थल को आधारिक संरचनात्मक संसाधनों एवं आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित करने की आवश्यकता है।
9. अध्ययन क्षेत्र के समस्त ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्मारकों को सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षण प्राप्त होना चाहिए।
10. अध्ययन क्षेत्र में विदेशी पर्यटकों को अधिक संख्या में आकर्षित करने के लिए दिल्ली और मुम्बई के अतिरिक्त अन्य प्रवेश द्वारों को भी विकसित करना चाहिए जिससे इन दोनों नगरों पर पड़ने वाले अतिरिक्त दबाव को कम किया जा सके। दिल्ली के निकट जेवर हवाई अड्डे का निर्माण इस दिशा में एक सराहनीय कदम हैं।

उपरोक्त विश्लेषण की आधार पर निष्कर्षतः यह स्पष्ट है कि यदि अध्ययन क्षेत्र को सरकार और निजी क्षेत्र के सम्मिलित सहयोग से पर्याप्त सहायता दी जाये तथा इसे पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित किया जाये तो राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के समीप स्थित होने के कारण निश्चित रूप से यह क्षेत्र अन्य पर्यटन क्षेत्रों से अच्छा पर्यटन क्षेत्र विकसित हो जायेगा और यह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व पा सकता है और स्थानीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर रोजगार की सम्भावनाओं एवं आर्थिक विकास के साथ–साथ इस क्षेत्र की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों की भी सुरक्षा की जा सकती है। इसीलिए अध्यक्ष क्षेत्र के प्रत्येक पर्यटक स्थल पर वहाँ की ऐतिहासिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक मौलिक विरासत को सरंक्षित रखते हुये पर्यटन के क्षेत्र में समस्त वांछित विकास की नितान्त आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. Bali Akhil. "Tourism and Travel Management: A management Perspective," Notion Press, 2021.
2. Bansal SC. "Tourism and Travel management: Basic Principles", Meera Prakashan, Saharanpur, 2006.
3. Bhatia AK. "International Tourism Management," Sterling Publishers Pvt Ltd, 2021.
4. Chaudhary Manjula. "Tourism Marketing," Oxford University Press, 2010.
5. Dhar Prem Nath. "Introduction to Tourism And Travel Managemnet," Kanishka Publisher, 2020.
6. Dileep MR. "Tourism: Concept, Theory and Practice," Dream Tech. Press, 2020, 50.
7. Roday S, Biwal A, Joshi V."Tourism: Operations and Management," Oxford University, Pressm, 2009.
8. Singh RK."Uttar Pradesh: Jila Darshan," Upkar Prakashan Agra-2, 2019.
9. Swain SK, Mishra JM. "Toursim: Principles and practices," Oxford University Press, 2011.
10. Varkat AMA. "Travel and Tourism Management," Prentice Hall, India learning Pvt. Ltd., 2015.
11. Varun DP (State Editor). "Uttar Pradesh District Gazetteers: Meerut," U.P. Government Press Rampur, 1980.
12. "Varshik Sandarbh Granth-Bharat", Prakashan Vibhag, Suchana Aur Prasaran Mantralya, Bharat Sarkar, 2020.